

રણેન્દ્ર જીજલબલપુર દ્વારારચત્તિ





समता के सागर, गुरुवर हमारे ।
संसार-सागर, से अगणित उबारे ॥
शुद्धात्म सेवी, हे सन्मति प्रदाता ।
हमको भी तारो ! हम आये द्वारे ॥
विषयों की भाषा भी, जिनको न भाती ।
बस आत्म - आराधना ही सुहाती ॥
आचार्य उवज्झाय साधू दिगम्बर ।
सबको है वंदन, अगणित हमारे ॥
शिवमार्ग-श्रृंगार संवर तुम्हारा ।
सतत मनु भवामो ही परिचय है प्यारा ॥
तुम्ही ज्ञान-सागर तरण तारणारे ।
पधारो मुनीश्वर चरण मन पखारे ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र अवतर अवतर संवौषद्
ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्व आचार्य उपाध्याय साधु मुनीश्वराः ! अत्र मम सन्निहितो
भव भव वषट् । पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।





(सार छंद)

नीर लिये मुनिमन सम उज्ज्वल, मुनि पद पंकज धोवे ।
हूँ अनादि अनिधन श्रद्धा ही, जन्म-मरण दुख खोवे ॥
जीव सदा चैतन्य विलासी, शाश्वत प्रभु अविनाशी ।
निज स्वभाव की भूल मुझे, भटकाती लख चौरासी ॥
तीन काल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा ।





भव-आताप विनाशी अमृत, अनुभव मुनिवर पाये ।
भाव शुभाशुभ की ज्वाला से बचने प्रभु ढिग आये ।
महामोह की कुटिल कालिमा, पल-पल मुझे रूलाती ॥
परमागम परमामृत सेवन, से ही समता आती ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो भवाताप विनाशनाय
चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।





चारगति चौरासी योनी, घोर महा दुख पाया ।
यह संसार महा दुख सागर, आज समझ में आया ॥
निज चैतन्य विलासी प्रभुवर, अक्षत धाम समाये ।
अक्षयपद पाने हे मुनिवर, शरण आपकी आये ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं
निर्वपामीति स्वाहा ।





विषय वासना कैसे छूटे, कौन सुखी हो पाया ।
मृगतृष्णा में भ्रमा चतुर्गति कौन बचाने आया ॥
धन्य-धन्य निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, आत्म अनुभव करते ।
कामबाण की दुष्ट सर्पिणी, कीलित करके रखते ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।





क्षुधा-वेदनी नागिन डसती, व्यथा सही नहिं जाती ।
भक्ष्य-अभक्ष्य गिने बिन परणति, भव-भव में दुखपाती ॥
परमानंद सुधारस पीते, मुनिवर नहीं अघाते ।
युक्ताहारी परम दिगम्बर, तृप्ती स्वयं में पाते ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥
ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।





ज्ञान मात्र हूँ जाननहारा, बात यही मन भायी ।
निज को निज पर को पर जानूँ, सीख यही सुखदाई ॥
अन्तर दीप जलाने प्रभुवर, मिले दीप जग नामी ।
शाश्वत चेतन दीप दिखाया, तुमने त्रिभुवन स्वामी ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।





मंगल उत्तम शरण स्वयं हूँ, बोधि कौन दर्शावे ?
ध्यान ध्येय श्रद्धेय स्वयं हूँ, तुम बिन कौन बतावे ।
शुक्ल ध्यान की अग्नि प्रज्वलित, हो प्रभू कर्म निवारे ।
शुद्धि की श्रद्धा ही खोले, बंद मुक्ति के द्वारे ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं
निर्वपामीति...





तीन भुवन में सारभूत, शुद्धात्म मुनीश्वर ध्याते ।
समता शुचिता के पग पड़ते, तीर्थ वहीं बन जाते ॥
पुण्य फला अर्हन्त प्रभू का, समवशरण सुखकारी ।
मार्ग मार्गफल जिनशासन में, दर्शाया अविकारी ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वपामीति...





निजानंद वैभव की मस्ती में, मुनिमस्त विचरते ।
तीन लोक के नाथ आप ही, वंदन सुरपति करते ॥
ऋद्धि - सिद्धियाँ हाथ जोड़कर, खड़ीं अर्घ्य ले द्वारे ।
उदासीन निज रूप मगन मन, निज निधि निरखनहारे ॥
तीनकाल के सकल मुनीश्वर, आया शरण तिहारी ।
दुविध संग-बिन शुद्ध उपयोगी, तिन पद धोक हमारी ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं
निर्वपामीति...



जयमाला

सिद्धों की श्रेणी में आने वाला जिनका नाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को मेरा नम्र प्रणाम है ॥ टेक ॥
परम दिगम्बर मुद्रा देखी, हर्षित हृदय हमारा है ।
रत्नत्रय धारी हे गुरुवर, तेरा एक सहारा है ॥
सोने का सूरज ऊगा ज्यों, निरख आपको लगता है ।
ज्ञानध्यान वैराग्यमूर्ति को, परख शान्त रस झरता है ॥
निज चैतन्य गुफा में बसते, शाश्वत यही मुकाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 1 ॥





मोह महा रिपु समझ आषने, छोड़ी गृहस्थ अवस्था है ।
सिद्धों जैसी शुद्धि पाने, ले ली परम प्रवज्या है ॥
भोग भुजंग समान देखकर, काँप गया तन-मन सारा ।
कदली तरु संसार लेखकर, सिमट गई जीवन धारा ॥
रत्नत्रय निधि की रक्षारत, रहते आठों याम हैं ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 2 ॥





दीक्षा लेते समय बोलते, माँ तू तन की जननी है ।
है अनादि जननी शुद्धात्म, दूजी माँ जिनवाणी है ॥
देह रमाने वाली रमणी, तू नहिं रमणी मेरी है ।
शाश्वत रमण कराने वाली, मुक्ति-वधू ही मेरी है ॥
पंच महाव्रत पंच समिति का, पहना सुन्दर जाम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 3 ॥





दश धर्मों के धनी आप ही, शूरीर परिषह विजयी ।
हे त्रिगुप्ती धारी ऋषि मुनिवर, शुद्ध उपयोगी ज्ञानमयी ॥
पूरब भोग न चिन्तन करते, सुर पदवी की चाह नहीं ।
नहीं कोई प्रतिबंध है जिनको, सिर पर कोई भार नहीं ॥
आतम अनुभव अति आवश्यक, एक यही बस काम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 4 ॥





बड़े पुत्र सर्वज्ञ प्रभु के, आनंद अमृत पीते हैं ।
प्रचुर स्वात्म रस संवेदन से, सच्चा जीवन जीते हैं ॥
चक्री शीश झुकाता फिर भी, रंच मान नहीं आता है ।
स्वर्गों जैसा वैभव भी प्रभु, तुमको लुभा न पाता है ॥
विषय कषायारम्भ न जिनके, ज्ञान ध्यान ही काम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 5 ॥





यह अपूर्व अवसर कब पाऊँ, बाह्यान्तर निर्ग्रन्थ बनूँ ।
सर्व बंध-सम्बन्ध छोड़कर, महत् पुरुष के पंथ चलूँ ।
यही प्रतिज्ञा है भगवन अब, दूजी माँ न दुखी करूँ ॥
परम समाधि-मरण धारकर, मृत्यु महोत्सव सफल करूँ ।
मुक्ति-वधू ले जाये वहीं पर, जहाँ पूर्ण विश्राम है ।
जग के उन सब मुनिराजों को, मेरा नम्र प्रणाम है ॥ 6 ॥

ॐ ह्रीं त्रिकालवर्ती सर्वआचार्यउपाध्यायसाधु मुनीश्वरेभ्यो जयमाला महाधर्म्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।





(दोहा)

मुनिवर-भक्ति हृदय रहे, पाऊँ पद निर्वाण ।
वन-वन विचरूँ नगन हो, कब दिन आवे नाथ ॥
॥ पुष्पांजलि क्षिपामि ॥

